पेट्रोल, डीज़ल का बोलबाला बना रहेगाः रिपोर्ट

पैरिस स्थित अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी ने हाल ही में विश्व ऊर्जा परिदृश्य नामक रिपोर्ट प्रकाशित की है। रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि प्राथमिक ऊर्जा (यानी जीवाश्म ईंधन से प्राप्त ऊर्जा) की वैश्विक खपत में वर्ष 2040 तक 37 प्रतिशत की वृद्धि होगी। यह वृद्धि मूलतः एशिया, अफ्रीका, मध्य-पूर्व तथा लैटिन अमेरिका के देशों में होगी।

फिलहाल कच्चे तेल की खपत 9 करोड़ बैरल प्रतिदिन है और 2040 तक यह बढ़कर 10.4 करोड़ बेरल प्रतिदिन हो जाने का अनुमान है। मगर यह अधिकतम मांग होगी और इसके बाद मांग में वृद्धि नहीं होने की उम्मीद है। जहां तक कोयले की खपत का सवाल है, तो इसकी मांग 2020 तक सर्वोच्च स्तर पर पहुंच जाएगी। दूसरी ओर, अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी का अनुमान है कि नेचुरल गैस की मांग 2040 के बाद भी बढ़ती रहेगी।

हाल के दिनों में कच्चे तेल की सप्लाई काफी अधिक रही है और कीमतें गिरी हैं। इसका प्रमुख कारण यूएसए द्वारा गैस उत्पादन में वृद्धि को माना जा रहा है। मगर एजेंसी के अनुसार यह लंबे समय की सुरक्षा प्रदान नहीं करता। अंततः हमें चंद तेल उत्पादक देशों पर ही निर्भर रहना होगा।

जहां तक परमाणु ऊर्जा का सवाल है, तो अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी का कहना है कि इसकी सुरक्षा को लेकर चिंता के चलते कुछेक ही देश हैं (जिनमें चीन, भारत, कोरिया और रूस शामिल हैं) जो भविष्य में परमाणु बिजलीघर लगाने की योजना बना रहे हैं। 2013 में दुनिया भर में चालू हालत में जो 434 संयंत्र थे उनमें से 200 तो 2040 तक रिटायर हो जाएंगे। फुकुशिमा दुर्घटना के बाद जर्मनी व कई अन्य देशों ने परमाणु बिजली को पूरी तरह हटा देने का फैसला कर लिया है। अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी ने अपनी रिपोर्ट में इस महत्वपूर्ण तथ्य की ओर ध्यान दिलाया है कि आज तक कोई भी देश रेडियोधर्मी कचरे को ठिकाने लगाने का कोई सुरक्षित तरीका नहीं खोज पाया है।

यदि एजेंसी का आकलन सही है तो आने वाले दशकों में बिजली का उत्पादन मुख्य रूप से जीवाश्म ईंधन पर आधारित रहेगा। वैसे एजेंसी के विचार में इस दौरान सौर व पवन जैसे नवीकरणीय स्रोतों का योगदान काफी बढ़ेगा। फिर भी, एजेंसी के मुताबिक वर्ष 2040 तक हम वायुमंडल में 1 खरब टन कार्बन डाईऑक्साइड छोड़ेंगे। ***(स्रोत फीचर्स)***